श्री श्री श्री युगल स्वरुप

निजानन्द सम्प्रदाय के समस्त धार्मिक स्थलों व मन्दिरों में प्रतीक स्वरुप युगल जोड़ी पधराई जाती है। यह युगल स्वरुप प्रतीक हैं - पूर्ण पारब्रह्म सच्चिदानन्द की सम्पूर्ण शक्तियों के श्री राज जी महाराज स्वरुप हैं - इश्क और इलम के, श्री श्यामाजी प्रतीक हैं - अखण्ड और अद्वितीय आनन्द के। इस संसार के समस्त धर्मो में ईश्वर को ज्ञान का स्वरुप माना गया है और उनसे यही प्रार्थना की जाती है - तमसो मां ज्योतिर्गमय।

हे ईश्वर हमें अपने ज्ञान का प्रकाश दीजिये।

O, God, Take us from darkness to light.

बाहर की ज्योति बाहर का अंधकार दूर करती है, परन्तु व्यक्ति के अन्दर का अंधकार अन्तर की ज्योति से ही दूर होता है। आत्म ज्योति ही वास्तव में जीवन ज्योति है जो आन्तरिक अज्ञान को नष्ट करके अन्तर को 'प्रकाश' प्रदान करती है। अज्ञानता की सघन बदली के छटने के पश्चात ही 'मारफत' यानि ज्ञान के सूर्य का उदय होता है। ज्ञान के इस नित्य प्रकाश में जीवन को जो परम आनन्द प्राप्त होता है, उसका वर्णन यहाँ के कुछ सीमित शब्दों में कर पाना बहुत ही असम्भव कार्य है। श्री राजजी महाराज के स्वरुप का प्रतीक है - इश्क। यह इश्क मूल परमधाम का वो अखण्ड इश्क है - जिसका सम्पूर्ण सागर वो अपनी आत्माओं के लिये अपने हृदय में छिपाये रखते हैं। जो ब्रह्मआत्मा उनकी मेहेर से उस इश्क के सागर तक पहुँच जाती हैं, उसके समक्ष इस संसार के चौदह लोकों का सुख भी एक कण से अधिक महत्व नहीं रखता।

इस्क को सुख और है, और सुख इलम।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवे खसम।।

सागर-प्र० ५ चौ० १३६

यूं तो इश्क और इलम दोनों ही श्री राजजी महाराज जी की अखण्ड न्यामतें हैं। परन्तु इलम का सुख और इश्क का सुख दोनों की लज्जत अलग-अलग है। श्री राज जी महाराज जी की यह स्वयं की मेहेर है, जिसको जैसा भी चाहें, सुख दें।

रुहों को श्री श्यामा जी का आनन्द अंग कहा जाता है और श्री श्यामा जी अंग है - श्री राज जी महाराज के। इसलिये तीनों ही अभिन्न है, तीनों में कोई भेद नहीं। जिस प्रकार श्री कुलजम स्वरुप साहिब जी के अन्दर सत-चित और आनन्द तीनों ही स्वरुप विद्यमान हैं, उसी प्रकार श्री युगल स्वरुप और रुहें कहीं भी, कभी भी जुदा नहीं हैं। यह जुदाई केवल थोड़ी देर के लिये हो सकती है, क्योंकि मूल से ही तीनों एक हैं, और निसबत के पश्चात पुनः तीनों एक। यदि हम ज्योमैट्री में 'प्रकार' से गोला खीचतें हैं, तो गोला तभी पूर्ण होता है, जब जहाँ से जिस बिन्दु से पेन्सिल चलनी

Nijanand App

शुरु हुई है, उसी बिन्दु पर आकर फिर रुके। इस गोलाई की सम्पूर्णता पर ही शायद यह धरती गोल है, यहाँ की बुद्धि गोल है, यहाँ का सूर्य गोल है। श्री परमधाम गोल है, रंग महल का मूल मिलावा गोल है, पुखराज पर्वत गोल है और हौज कौसर भी गोल है।

मिली मासूक के मोहोल में मानिनी, आसिक अंग न मांहे अंग।
जानूं जामिनी बीच जुदी हुई हक जात सो, पेहेचान हुई प्रात हुए पीउ संग।।

कि०-११७/१

हृदय रुपी परमधाम के रंग महल में मानिनी आत्माएँ अपने प्रियतम से मिलीं। अंग - प्रत्यंग उनका अस्तित्व प्रियतम के स्वरुप में एकाकार हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ मानों वे अपने धनी से मात्र एक रात्रि के लिये ही अलग हुई हों। जैसे ही अज्ञानता की रात्रि बीती और ज्ञान की सुबह हुई, वे पुनः अपने मूल स्वरुप के साथ हो गईं। वास्तव में ब्रह्मात्माएं ब्रह्म से कभी अलग हुई हीं नहीं जहाँ पर भी रहीं, अर्श परमधाम में ही थीं। परमधाम असीम है, कोई भी स्थान परमधाम के बाहर है ऐसा कहना उसे सीमाबद्ध कर देने के समान है। जैसे स्वप्न में होता है, ऐसे ही रुह ने परमधाम में बैठकर ही स्वप्नवत माया के परदे पर चल चित्र की तरह जगत-लीला को देखा। इसलिये वे जहाँ भी रहीं, परमधाम में तो थीं ही। रुह और हक मिले तो दोनों एक दिल हो गये। जब रुह ने अपने अन्तःकरण में अपने प्रियतम को बिठाकर 'किबला' मन्दिर बना लिया, तब पारब्रह्म प्रियतम ने 'स्वीकार' या 'कबूल' कह कर स्वीकार किया। उनकी अर्द्धांगिनी उनसे एक बार पुनः निसबत के सूत्र में बंध गई। वह पहले भी उनसे एक थी, बीच में भी भावनाओं से मिली रही और अन्त में पुनः ऐसे एकाकार हुई मानों प्रियतम उससे कभी जुदा हुए ही नहीं थे।

नांही जुदा कांही जांही अरस मांही, मिले रुह भेले दिन एक हुए।
तो कलूब किबला भया, मकबूल अल्ला कहया।
अव्वल आखर मिले, एक हुए न जुए।।

कि० ११७/३

अध्यात्म एक अत्यन्त निगूढ़ विषय हैं गूढ़ का अर्थ है, गहराई में होना और निगूढ़ का तो अर्थ ही है - असीम गहराईयों में तथ्यों और रहस्यों का छिपा होनां यही कारण है कि अध्यात्म जिसका मूल विषय आत्मा और परमात्मा है जाहिरी में कुछ भी तो नज़र नहीं आता है। नज़र आता है तो केवल स्थूल शरीर जिसका लय होना निश्चित है। आत्मा तो सूक्ष्म रुप से छिपी रहती है, जीवन श्री राजजी महाराज जी की अपार मेहर और हुकुम से बल लगा कर मन, चित, बुद्धि और अहंकार को पार करता हुआ जागृत होता है। परन्तु इस रहस्य को समझ और समझा पाना अत्यन्त दुष्कर कार्य होता है। धर्म में चूंकि कर्मकाण्ड का वाह्य बंधन होता है, इसलिये इसका प्रत्येक कर्म स्पष्ट दिखता है लेकिन अदृश्य आत्मा का कोई कर्म कभी भी किसी को नहीं दिखता। आत्मा भी श्री सतगुरु के मार्ग दर्शन में उनके सानिध्य में, प्रेरणा प्राप्त करके अपना सफर करती चली जाती है।

Nijanand App

दूध के अन्दर जिस प्रकार मलाई, दहीं, खोया, पनीर, घी छिपा रहता है और कुशल हलवाई चीनी, रंग, इत्र का प्रयोग करके आकर्षक मिठाई के रुप में तैयार करके, खूब धन कमाते हैं। ठीक उसी प्रकार श्री सतगुरु आत्मा के अंधेरे को समाप्त करके, उसे प्रकाशित कर, छिपी हुई शक्तियों को जागृत करके परमधाम के पाट घाट तक पहुँचा दिया करते हैं। मेहेर, हुकम, जोश, इश्क और इलम आदि पारब्रह्म की न्यामतें साधारण जीव को अखण्ड सुख और अखण्ड दौलत प्रदान करती हैं। यह दौलत है - अपने धनी का अगाध स्नेह, प्रेम, मेहेर और निसबत के सुख। इस निसबत की खुशबू जब हवाओं में फैलती है तो झूठ, फरेब और बुराई भी ठहर जाया करती है। इसीलिये तो मोमिनों का खाना-पीना आदि सब अपने धनी का दीदार है। वे खाते-पीते, उठते-बैठते, सोते-जागते हुए एक पल भर के लिये भी अपने प्रियतम का ध्यान नहीं छोड़ते। उनकी शोभा उनका स्वरुप सिनगार, यही तो उनका आहार है। वे उनके अपार मेहेर के सागर में झीलना करते हुए, उन्हीं की वाहेदत के सागर में एक रस हो जाया करते हैं।

खाते, पीते, उठते, बैठते, सोवत, सुपन, जाग्रत।
दम न छोड़े मासूक को, जाको होए हक निसबत।।

सिनगार - २०/३

एही आहार आसकन का, एही सोभा सिनगार।
झीले सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार।।

सि० - १८/७१

इसलिये जब कभी भी किसी धार्मिक स्थल में जाया जाये, अपने अन्तःकरण को मन-वचन और कर्म से शुद्ध करके ही अन्दर प्रवेश किया जाये और श्रद्धा, भाव और निष्ठा के साथ माथा टेककर जो भी न्यौछावर अर्पित की जाये, सम्पूर्ण समर्पण और श्रद्धा के साथ। हमारा तो कभी भी कुछ नहीं था, न हमारा है और न ही हमारा रहेगा। इसीलिये इस संसार के समस्त धर्मो की आरती में यह शब्द अवश्य रहते हैं - तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा। भोग को ले जाने में प्रतिस्पर्द्धा के स्थान पर श्रद्धा का अलग भाव रखा जाय। शुद्ध भाव से भोग के एक ग्रास को भी, प्रसाद रुप में, अंगना भाव से ग्रहण करके अर्न्तमन को जो शान्ति प्रेम और मनोबल का अखण्ड प्रसाद प्राप्त होगा, उसकी तुलना डिब्बा भरे प्रसाद से कदापि नहीं की जा सकती! यह प्राप्ति धर्म के बाहरी स्वरुप की सीढ़ियाँ चढ़ने के पश्चात् अध्यात्म के प्रथम सोपान का केवल परिचय मात्र है।

हमारा मूल विषय यह है कि धर्म और अध्यात्म के इस स्पष्ट-अस्पष्ट दुर्गम मार्ग पर किस भांति चला जाये ताकि हम युगल स्वरुप सच्चिदानन्द, पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत, इंशा अल्ला ताला, SUPREME TRUTH GOD के पाक और निर्मल चरणों तक अपने निजधर में किस प्रकार पहुँचें। इसके लिये श्री सतगुरु एक सशक्त माध्यम के रुप में, कारज-कारण के द्वारा समस्त संशयों का निवारण करके बाहर और अन्दर से निर्मल स्वरुप प्रदान करेगें। तब श्री कुलजम स्वरुप साहिब जी की यह निम्न चौपाई साक्षात होने में एक क्षण भी नहीं लगेगा।

Nijanand App

जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल।
तो अधखिन पिउ न्यारा नहीं, मांहे रहे हिल मिल।।

किरन्तन - १३२/४

हम परमधाम के पच्चीस पक्षों में बाहरी स्वरुप के रुप में आठ सागर देखते हैं, यह बाहरी स्वरुप है। रंग महल के अन्दर मूल-मिलावा में फिर आठ सागर पाते हैं जो श्री राजजी महाराज के दिल के अन्दर हैं। इसीलिये बाहर और अन्दर के दोनों स्वरुपों को बराबर पाक और साफ होना है। धर्म बाहरी रुप है, अध्यात्म भीतर का स्वरुप है। धर्म प्रारम्भ है, सतगुरु मध्य में हैं, अध्यात्म पुनः सफर का अन्त है। वास्तव में धर्म, सतगुरु और अध्यात्म तीनों का ही इस नश्वर जगत में मिश्रण है - सतचित और आनन्द। सत है - धर्म और ज्ञान, चित्त यानि चेतन स्वयं पूर्ण ब्रह्म है और आनन्द हैं - श्री सतगुरु जो आदि से अन्त तक, किसी न किसी तन के अन्दर से कार्य करते रहे हैं और करते रहेंगे, जब तक कि बारह हजार की जमात मूल-मिलावा में श्री युगल स्वरुप के चरणों में जागृत नहीं हो जातीं। जब सब जाग जायेंगे तो हमें ऐसा आभास होगा कि हमें अपने श्री युगल स्वरुप के नूरमयी चरण-कमलों से जुदा हुए एक क्षण भी व्यतीत नहीं हुआ।

सन् १७३५ में हरिद्वार में एक विशाल धर्म सम्मेलन हुआ। इसमें समस्त धर्मों के आचार्य और प्रमुख अनुयायी सम्मिलित हुए। महामति श्री प्राणनाथ जी ने निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति समझाते हुए स्पष्ट किया कि हम श्री युगल किशोर अक्षरातीत श्याम-श्यामा, जिन्होंने नित्य वृन्दावन में राधा-कृष्ण के तन में बैठकर लीला की थी। वे साक्षात परम धाम के मूल-मिलावा में बहुत ही रत्न मयी कंचन सिंहासन पर शोभायमान हैं। श्री युगल स्वरुप के नूर की आभा से चारों ओर ज्योति की लहरें और किरणें झिलमिल करती हुई दिखलाई देती हैं। हम इन्हीं का जाप करते हैं। हमारा मन्त्र तारतम है। हमारी देवी अखण्ड ब्रह्म विद्या अर्थात श्री कुलजम स्वरुप साहिब जी है। हमारे सतगुरु श्री देवचन्द जी को जहाँ परम गुझ तारतम ज्ञान मिला, वह नवतनपुरी हमारी पुरी है।

श्री युगल किशोर को जाप है, मन्त्र तारतम सोय।
ब्रह्म-विद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोय।।

श्री बीतक साहिब जी -प्र०-३७ चौ० ७६

आतम के आधार समस्त सुन्दरसाथ को सादर प्रणाम सहित

नीरु खुराना,
कानपुर

निगाह

जिसे जो प्राप्त करना है उसे अपनी निगाह सिर्फ वही रखनी चाहिए। चूंकि निगाह का उसमें रहना और निगाह में उसके रहनें के अतिरिक्त तदर्थ प्रयास और प्राप्ति का कोई उपाय नहीं हैं।

Nijanand App